International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-12-2020, Accepted: 16-01-2021, Published: 26-02-2021
Volume 7, Issue 1, 2021, Page No. 72-74

कृष्णा सोबती के उपन्यास 'तीन पहाड़' में आधुनिक मानव का मनोविश्लेषणवादी चित्रण

विष्णुप्रिया भुक्ता
रामादेवी महिला विश्वविद्यालय, ओडिशा, भारत

सारांश
कृष्णा सोबती एक प्रमुख महिला कथाकार के रूप में जानी जाती हैं। वे अपनी संयमित अभिव्यक्ति और सुथरी रचनात्मकता के लिए प्रख्यात हैं। कृष्णा सोबती ने अपनी लम्बी साहित्यिक यात्रा में हर नई कृति के साथ अपनी क्षमताओं का अतिक्रमण किया है। उनकी उपन्यास ' तीन पहाड़ ' एक प्रेम कथा पर आधारित है जिसके केंद्र में है प्रेम वंचिता जया। यह उपन्यास प्रेम प्रसंगों के ताने-बाने में बुना प्रेम संबंधों की सफलता और असफलता प्रस्तुत करता है। ' तीन पहाड़ ' की कथावस्तु श्री-जया का असफल प्रेम, श्री-एड़ना का प्रेम विवाह, तपन-पुतुल का प्रेम प्रसंग तथा तपन- जया की कुछ समय के प्रेमाकर्षण की घटनाओं पर आधारित है। इस उपन्यास के पात्र प्रेम और आकर्षण के मध्य झूल रहे हैं तथा परिणाम स्वरूप अंतर्द्वंद का शिकार बन रहे हैं। वस्तुतः यही आज के आधुनिक मानव की करुण कहानी है जिसे वह अपनी बदलती आकांक्षाओं और भावनात्मक दुविधा से लिखता है। इसके पात्र जया आज के आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ एक आदर्श नारी के रूप में भी नजर आती है। इस पुरुषवादी समाज की भोगी मानसिकता का वह डट कर सामना करती है और अपने आत्म सम्मान की रक्षा भी करती है। उसके प्रेम में नैसर्गीकता का दर्शन होता है। वह मरण पर्यंत ऐन्द्रिय मोह का शिकार नहीं होती और अपने चरित्र की पावनता को बनाए रखती है। इस उपन्यास में मूलतः पात्रों का मनोचित्रण किया गया है।पात्रों की मानसिक धारा का उदघाटन, उसकी अन्तर्धाराओं में एकानिरवति
खोजना और स्फुट घटनाओं से पात्रा मानस की संगति बिठाना उपन्यास की एक विशेषता मानी ज सकती है।आज अगणित संघर्षों और दबावों से त्रास्त मानव चेतना पहले जैसी सीधी सादी, निद्र्धन्द्ध नहीं रही है, वह विचित्रा अन्तर्संघर्षों से ग्रस्त, अस्पष्ट और दुरूह हो गई है। इस उपन्यास में मनुष्य क्या करता है यह तथ्य उपन्यासकार के लिए गौण है। उसका ध्यान मुख्य रूप से इस बात पर रहता है कि मनुष्य जो कुछ करता है, वह क्यों और कैसे करता है। इसके पात्र अपनी आंतरिकरिकता, एकानितकता और स्तब्धता के कारण सहज सामान्य दृषिट से निर्बल, निरर्थक (एबनार्मल) प्राणी जान पड़ते हैं, किन्तु वास्तव में अछूती, अदम्य मानवीय चेतना के वाहक और मानव के आन्तरिक यथार्थ के विश्वसनीय साक्षी हैं।

मूलशब्द: कृष्णा सोबती, उपन्यास ' तीन पहाड़, आधुनिक मानव का मनोविश्लेषणवादी चित्रण

प्रस्तावना
प्रेमचंदोत्तर युग में सन् 1937 से 1967 तक के 30 वर्षों के लम्बे अन्तराल में हिंदी साहित्य अनेक महत्वपूर्ण मोड़ों से गुजरा है| प्रेमचंदोत्तर युग मनोविज्ञान का विकसित रूप है| मनोविज्ञानिकों की धारणाओं और मान्यताओं के प्रभाव और उपन्यासकारों की दृष्टि बदली है| लेखकों ने मनुष्य के मन में पैदा होने वाली कुंठा का सूक्ष्म निरिक्षण किया तथा अंतर्मन में अंतर्द्वंद के विभिन्न सन्दर्भों का चित्रण उपन्यासों में मनोविश्लेषणवादी धरातल पर होने लगा| कृष्णा सोबती का उपन्यास 'तीन पहाड़' को यदि कलात्मक कसौटी पर कस कर देखा जाए तो यह न केवल सफल उपन्यास के रूप में नज़र आएगा बल्कि निसंदेह मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह छोटी सी पुस्तिका बहुत उपयोगी तथा मनोरंजक सामग्री प्रस्तुत करते हुए भी नज़र आएगी| आलोच्य उपन्यास में समस्त चरित्रों का न केवल वाह्य आचरण या कार्य प्रकरण से उत्पन्न स्थितियों का विश्लेषण मात्र है बल्कि उनके अंतःकरण की समस्त ग़लतफ़हमीयों का चित्रण भी देखने को मिलता है| यही विशेषता इस

उपन्यास को सफल मनोवैज्ञानिक उपन्यास बनाती है| 'तीन पहाड़' महज़ एक त्रिकोणीय प्रेम की कहानी नहीं है अपितु परिस्थितियों में उलझे मानव के अंतर्द्वंद का चित्रण है| अन्य शब्दों में कहा जाये तो यह उपन्यास मानवीय विडंबनाओं का दस्ताबेज़ है आकांक्षा से महत्वाकांक्षा और निराशा से हताशा तक की यात्रा का चित्रण है| इसमें उपन्यासकार ने त्रिकोणीय प्रेम के द्वंदात्मक स्थिति को प्रस्तुत करने के साथ-साथ आलोच्य उपन्यास के प्रत्येक चरित्र के आतंरिक दुविधा को उभारा है| इसमें केवल आत्मा और हृदय का ही नहीं बल्कि कर्त्तव्यबोध और मानवीय आकांक्षाओं का अंतर्विरोध भी प्रस्तुत किया गया है| आलोच्य उपन्यास का प्रत्येक चरित्र कथावस्तु के घटनाक्रम में किसी न किसी स्थल पर उस अंतर्द्वंद का सामना करता है| प्रेम, विश्वास, कर्त्तव्य और विवेक के मानदंड पर अपना व्यक्तित्व निर्धारित करते हुए पाठकों को दृष्टिगोचर होता है| प्रत्येक चरित्र किसी न किसी कारण से दुविधा से ग्रस्त है और इसी मानवीय अंतर्द्वंद का चित्रण आलोच्य उपन्यास में प्रमुख है| इस उपन्यास की कथावस्तु जया, तपन और श्री के त्रिकोणीय प्रेम पर आधारित है| जया के प्रति वचनबद्ध श्री एड़ना नमक लड़की से विवाह कर लेता है, जिससे जया अत्यधिक मर्माहत हो कर घर छोड़ कर दार्जलिंग आ जाती है| वहाँ उसका परिचय कहानी के प्रारंभिक सोपान के नायक तपन से होता है| जया और तपन एक दूसरे से मिलते हैं और दोनों की एक दूसरे के प्रति भावनात्मक दुर्वलता और आसक्ति और अधिक होती जाती है अपितु दोनों ही अपने भीतर की दुविधा से निकल कर इसे नवीन सोपान नहीं दे पाते हैं| हालाँकि तपन के चरित्र में आंशिक दुर्बलता देखने को मिलती है ; वह पुतुल के प्रति अपने पूर्वस्थित प्रेम को दृष्टिच्युत कर जया के साथ जीवन व्यतीत करना चाहता है परन्तु कई प्रसंगों पर पाठक उसको भी दुविधाग्रस्त पाते हैं| वहीँ दूसरी ओर जया भी अपनी अतीत की स्मृतियों और तपन के प्रति अनुराग को ले कर द्वन्द में रहती है| उसकी भावनाएँ और अधिक आहत तब होती हैं जब उसकी भेंट पुनः श्री से होती है जिसका एड़ना के साथ विवाह हो चुका होता है| वहाँ श्री भी अपनी आत्मग्लानी और एड़ना के प्रति अपने मोह के बीच में फँसा हुआ मिलता है| श्री से पुनः भेंट होने की घटना जैसे जया को झकझोर कर रख देती है| उसका अंतर्द्वंद इतना प्रवल हो उठता है कि वह उस द्वन्द से बाहर न निकल सकने पर अंत में आत्महत्या कर लेती है जिससे पाठक वर्ग का संवेदनशील हृदय विचलित हो उठता है| इस उपन्यास में पत्रों की अंतर्वेदना, द्वन्द, प्रेम, निराशा आदि से उत्पन्न आतंरिक हलचल का बड़ा ही स्वाभाविक और मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है| यहाँ, मनुष्य(पात्रा) अच्छा है या बुरा, यह बताने की अपेक्षा बल यह मालूम करने पर रहता है कि क्या वह वास्तव में जैसा दिखता है, भीतर से, मन से, वैसा है? इन प्रश्नों की गहराइयों में जाने पर, उपन्यासकार मनुष्य के निमित्त कोई सुगम निर्णय देने की अपेक्षा, उसकी रचना और विकास-प्रक्रिया के अध्ययन में अधिक रूचि लेता है| इसमें प्रेम में असफल पत्रों की कुंठा का सजीव वर्णन देखा जा सकता है| साथ ही इस उपन्यास में स्त्री-पुरुष पात्र संबंधों की अस्पष्टता में जीते हुए दिखलाई पड़ते हैं| तपन स्नेह और वासना के बीच द्वन्द में उलझा हुआ मिलता है तो श्री अपनी भावना और शरीर के बीच के द्वन्द में पड़ा हुआ दिखता है| इन सब में जया इस पुरुशवादी समाज की उस नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने अस्तित्व को स्वीकार कर समाज के नैतिक पतन पर प्रश्न चिह्न लगाती है| इस सन्दर्भ में प्रसाद जी की यह उक्ति उचित प्रतीत होती है कि-"निषेध प्रधान समाज-प्रणाली मानव मन की कुंठा को अंकुरित करती है और कुंठाग्रस्थ मन कभी स्वस्थ समाज की रचना नहीं कर सकता| निशेधादेशों द्वारा समाज की वाह्य औपचारिकता भले ही बनी रहे परन्तु उसका आतंरिक ह्रास तो अवश्यम्भावी है| हमारा समाज इस प्रकार के मानसिक रोगियों का समुदाय है- यह रोग बड़ा व्यापक है और उपचार की अपेक्षा रखता है"| निष्कर्षतः इस उपन्यास से यह ध्यात्व है कि आज के अनिश्चित, अव्यवस्थित युग में एक व्यक्ति के अनेक बहुमुखी व्यक्तित्व उभर कर आ रहे हैं और उसके परिणामस्वरूप उसके भीतर जो संघर्ष घिर गया है उसी का सजीव प्रतिबिम्ब उपन्यास में देखने को मिलता है|

यह स्वीकार करना आवश्यक है कि व्यक्ति, समुदाय, और समाज की संस्थाएँ सभ्यता के निर्माण के तीन मुख्य पात्र हैं और इसी के अनुसार कार्य करना मानव की ख़ुशी के लिए

अनेक महान संभावनाओं के द्वार खोलता है और ऐसे वातावरण के निर्माण में सहयोग प्रदान करता है जिसमें मानवात्मा की सच्ची शक्तियाँ निर्मुक्त हो सकती हैं| अतः इस उपन्यास में आधुनिक मनुष्य के अंतर्द्वंद और संशयों की गाथा कही गयी है| यह उपन्यास आधुनिक मनुष्य के मन की पहेलियों को सामने रखता है| यह कहना गलत न होगा कि यह उपन्यास मनोविश्लेषणात्मक आधार पर व्यक्ति मूल्यों की स्थापना करता है|

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. नागेन्द्र, डॉ. हरदयाल " हिन्दी साहित्य का इतिहास मयूर प्रकाशन, तिथि: 1973
2. द्विवेदी,हज़ारीप्रसाद, "हिन्दी सहिया का उद्भव और विकास" राजकमल प्रकाशन,तिथि: 1952
3. डॉ. एम. वेंकेटेश्वर, "हिन्दी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन"
4. सोबती,कृष्णा, " तीन पहाड़" तिथि: 2004.